' पोस्ट बॉक्स नंबर 203. नालासोपारा ' : किन्नर जीवन की संघर्ष गाथा

सुनीता के मड़के
शोधार्थी छात्रा
madke_sunita@redifmail
स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा
विश्वविद्यालय नांदेड़(महाराष्ट्र)

सारांश - ' साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं अपितु प्रतिबिंब कहलाता है' अतः समाज में घटित घटनाओं का चित्रण साहित्य के अंतर्गत किया जाना स्वाभाविक है। तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप हि साहित्यकार समाज के विभिन्न विषयों पर अपना लेखन कार्य करता है। हिंदी साहित्य जगत की साहित्यकारा चित्रा मुद्गल जी ने अपने उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 .नालासोपारा' ,में उपेक्षित एवं बहिष्कृत किन्नर समुदाय की जिंदगी की बारीकियों एवं तकलीफ को समाज के सामने रखने का प्रयास किया। विनोद इस एक किन्नर पात्र के जरिए लेखिका एक किन्नर की अपनी वजुद को साबित करने की जद्दोजहद को प्रस्तुत करती है।और दुसरी तरफ समाज के उस चेहरे को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती हैं ,जो आधुनिक होने के बावजूद भी उनकी मानसिकता आज भी रूढ़िवादी ही है। कुल मिलाकर यह उपन्यास पाठक को हिजड़ा समाज के प्रति अपनी विचारधारा को परिवर्तित करने हेतु बाध्य करता है।

बीजशब्द - प्रतिबिंब, किन्नर, बहिष्कृत,रुढ़िवादी,
विमर्श,तृतीयपंथी,वैश्वीकरण ।

प्रस्तावना -

वैश्वीकरण के दौर में समाज की अनेक समस्याओं ने साहित्यकारों का ध्यान अपनी और आकर्षित किया । परिणामतः साहित्य जगत में अनेक नवनवीन अपरिचित एवं अनछुए विषयों पर लेखन कार्य शुरू हुआ। अतः हिंदी साहित्य में भी हाशिए पर रखें विभिन्न उपेक्षित समुदायों को केंद्रित कर साहित्य रचा गया। इस आधार पर हिंदी साहित्य जगत में अनेक विमर्शो पर चर्चा चली। जैसे- स्त्री विमर्श, दलित विमर्श ,आदिवासी विमर्श ,अल्पसंख्याक विमर्श आदि। इनके अतिरिक्त 'किन्नर विमर्श ' भी प्रमुख समस्या के रूप में उभर आया। । जिस पर हिंदी रचनाकारों ने कम अधिक मात्रा में अपनी लेखनी चलाई।

किन्नर विमर्श पर लिखना आरंभ हुआ तब यह कोई नवीन विषय नहीं था। इसके पूर्व अनेक प्राचीन पौराणिक ग्रंथों में इन तृतीयपंथीयौं का उल्लेख मिलता है-एक तो महाभारत जैसे महाकाव्य में शिखंडी नामक साहसी किन्नर तथा दुसरा पांडवों के अज्ञातवास में अर्जुन का बृहन्नला नामक परिवर्तित रूप । भारतीय हिंदू संस्कृति में किन्नरों को यक्ष और गंधर्व के साथ स्थान दिया गया है । राम चरित्र मानस में भी इनका उल्लेख मिलता है -

"नाभा दुंदुभी बाजे ही विपुल गंधर्व किंनर गावहीं ।नाचहीं अपछरा बृंद परमानंद सूर् मुनि पावहीं ।। भरतादि अनुज विभीषनांगद हनुमदादि समेत त ।गहे छत्र चामर बेजत धनु असी चरम शक्ति बिराजते।।"..1

21 वी सदी में किन्नरों के अस्तित्व एवं उनकी अस्मिता के ऊपर अनेक सवाल उठाए गए । जिसके परिणाम स्वरूप इन प्रश्नों पर रचनात्मक टिप्पणी करने हेतु रचनाकारों ने अपनी लेखनी चलाई ।इनके संघर्षों पर अत्यंत सूक्ष्मता से लेखन कार्य किया। इसमें महत्वपूर्ण उपन्यासों के रूप में देखा जा सकता है -नीरजा माधव द्वारा लिखित 'यमदीप 'उपन्यास ,महेंद्र भीष्म द्वारा लिखित 'किन्नर कथा' निर्मल गुराडिया द्वारा लिखित 'गुलाम मंडी 'तथा चित्रा मुद्गल के द्वारा लिखित 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 - नालासोपारा' आदि।

हिंदी साहित्य जगत की प्रख्यात लेखिका चित्रा मुद्गल जी के मुख्यता चार उपन्यास देखे जा सकते हैं पहला 'एक जमीन अपनी ' दूसरा 'आवाँ' तीसरा 'गिलिगडु' चौथा उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203- नालासोपारा।'

'पोस्ट बॉक्स नंबर 203- नालासोपारा उपन्यास में लेखिका द्वारा एक ऐसे ज्वलंत मुद्दे को उठाया है ।जिसके विषय में हम सोचना तो दूर उस संदर्भ में बात करना भी उचित नहीं मानते वह है तृतीय लिंग वर्ग या हिजड़ा। आमतौर पर हिजड़ा यह शब्द सुनते ही हमारे जहन में ट्रेनों और बसों और बाजारों में झुंड से पाए जाने वाले तथा ताली बजाकर पैसे मांगने वाले ,हंगामा करने वाले एवं किसी भी शुभ कार्य पर आकर धनराशि की मांग करने वाले ऐसे मनुष्य समुदाय का चित्र उभर आता है। समाज की इसी अपेक्षाकृत संवेदनहीन एवं अमानवीय सोच के कारण यह समुदाय बहिष्कृत रहा है ।जिसे हम तृतीय लिंगी ,थर्ड जेंडर, हिजड़ा ,किन्नर, छक्का आदि नामों से पुकारते हैं। इनका समाज में अस्तित्व ना के बराबर माना जाता है ।समाज में इनको स्थान नहीं दिया जाता। ऐसे हाशीए पर रखें बहिष्कृत तबके का जीवन संघर्ष को इस उपन्यास के जरिए पत्रात्मक शैली में हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

चित्रा मुद्गल जी इस उपन्यास के संबंध में स्वयं प्रकाश डालते हुए कहती भी हैं की ," लंबे समय से मेरे मन में पीड़ा थी एक छटपटाहट थी कि आखिर क्यों हमारे इस अहम हिस्से को अलग-थलग किया जा रहा है ,हमारे बच्चों को क्यों हमसे दूर किया जा रहा है। आजादी से लेकर अभी तक कई रूढ़ियाँ टूटी लेकिन किन्नरों की जिंदगी में कोई बदलाव नहीं आया। क्यों आखिर इनका दोष क्या है ? यही सवाल था जो मुझे बेचैन करता था। 1974 में मैं मुंबई के नालासोपारा में रहती थी तब मेरी मुलाकात इसी समुदाय की एक व्यक्ति से हुई जिसे किन्नर होने की वजह से घर से निकाल दिया गया। यह उपन्यास उसी व्यक्ति के विद्रोह की कहानी है। जिसे मैंने अपने घर में बहुत दिनों तक साथ रखा था ।"...2

चित्रा मुद्गल के जीवन की असीम उपलब्धि के रूप में यह उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 .नालासोपारा' हमारे समक्ष तृतीयपंथी समाज के सामने खड़ी चुनौतियों को रखता है। और प्रस्तुत उपन्यास का केंद्र बिंदु विनोद नामक एक किन्नर पात्र इन सभी चुनौतियों का सामना किस प्रकार से करता है इसकी पूरी कहानी इसके अंतर्गत दी गई है। उपन्यास की कहानी मुंबई के एक उच्च मध्यमवर्गीय परिवार के विनोद नामक बच्चे की कहानी है जो जननांग विकृति का शिकार है। विनोद का परिवार अत्यंत संपन्न है। बड़ा भाई छोटा भाई यह दोनों शारीरिक रूप से सामान्य है । विनोद के पिता हरेंद्र की अच्छी खासी किराने की दुकान है । विनोद की मां वंदना बेन , विनोद के शारीरिक विकृति के कारण उसके प्रति अत्यधिक स्नेह एव् लगाव रखती है । उपन्यास की कहानी कुल मिलाकर विनोद के इर्द-गिर्द ही घूमती है । यह एक मेधावी छात्र है ।मां बाप ने अनेक डॉक्टरों को दिखाया ,किंतु उसकी शारीरिक विकृति को कोई ठीक नहीं कर पाता । इसका बचपन सामान्य बच्चों जैसा होता है ।खेलकूद पढ़ाई एवं शरारत में भी अव्वल किंतु जैसे-जैसे बड़ा होता है, उसकी शारीरिक संरचना में बदलाव आने लगता है।

विनोद के हिजड़ा होने की खबर ना जाने कैसे हिजड़ा जाति को लग जाती है और वह उसे ले जाने और अपनी मंडली में शामिल करने उसके घर आ जाते हैं। उस समय परिवार के लोग विनोद के छोटे भाई मंजू को दिखाकर उन्हें टाल देते हैं । किंतु हिजड़ा मंडली की मुखिया चंपाबाई को पता चलता है कि, यह झूठ बोल रहे है कोई दूसरा ही बच्चा है जिसको छुपाया जा रहा है।

उपर्युक्त प्रसंग हमें समाज के उन परिवार वालों की मानसिकता का दर्शन कराता है, जो घर में अगर किन्नर पैदा होता है तो उसको छिपाकर एवं समाज की नजरों से बचाकर अपने परिवार की इज्जत को बचाने का अथक प्रयास करते हैं। उपन्यास के इस प्रसंग मैं परिवार की अपने किन्नर बच्चे के प्रति प्रेम भाव से ज्यादा समाज में अपने परिवार की इज्जत जाने का डर ज्यादा प्रतीत होता है।

किन्नर भी अपने मंडली को बढ़ाने हेतु तत्पर होते हैं। हिजड़ों की मुखिया चंपा बाई के कथन से यह ज्ञात होता है- " खेल खेल रहे हैं यह लोग , बच्चा

इससे बड़ा है गनीमत इसी में है खामोशी से घर वाले असली बच्चे को उनके हवाले कर दे कोई हंगामा नहीं मचाएंगे पे जबरदस्ती पक्की खबर को कच्ची करने पर क्यों तुले हैं? इज्जत का ख्याल करें हम दोबारा आएंगे सभी साथियों सहित। पूरी बिल्डिंग को घर के नीचे इकट्ठा कर लेंगे। " 3

किन्नर बच्चे को घर से अलग होने एवं अपने परिवार की इज्जत बचाने हेतु परिवार वालों के द्वारा अनेक उपाय किए जाते हैं विनोद को मामा के घर रखने का सुझाव सुझाया जाता है । तत्पश्चात उसको हॉस्टल में रखने का भी सुझाव रखा जाता है। विनोद उर्फ बिन्नी स्कूल का मेधावी छात्र हैं किंतु किशोरावस्था तक आते-आते उसके लड़कियों वाले लक्षण प्रकट होने लगते हैं। अतः 14 साल तक पाल पोसके बडा करने के पश्चात अपने बच्चे को किसी के अनजान हाथों सौंपना ,स्वाभाविक है यह एक सदमा होता है। चंपाबाई अपने कहे अनुसार जल्द ही वापस लौटती है ।परिवार वालों को बस्ती मोहल्ले में होने वाले हंगामे से एवं परिवार की बदनामी से बचने के लिए विनोद को अंततः चंपा बाई के हाथों सौंपना पड़ता है। 14 वर्ष की उम्र में

अपने परिवार से अलगांव के कारण होने वाली विनोद की आंतरिक पिड़ा का चित्रण ही इस उपन्यास का मूल विषय है।

पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा उपन्यास में लेकिन लेखिका मुख्यता समाज द्वारा किन्नरों को मनुष्य न मानने की समस्या को उजागर करती है प्रस्तुत उपन्यास में विनोद अपनी चाहत को प्रस्तुत करते हुए कहता है कि

" सामान्य मनुष्य के बीच में सामान्य मनुष्य के रूप में ही पहचाने जाने की ख्वाहिश रखता हूं। " 4

इतनी कम उम्र में विस्थापन की समस्या से ग्रस्त विनोद पत्रों के माध्यम से अपने मां को प्रश्न पूछता है की ,ईश्वर ने मुझे शारीरिक विकृति का शिकार बनाया है तो इसमें मेरा क्या गलती है बा!

विनोद पढ़ाई में दिलचस्पी रखने वाला एक स्वाभिमानी किन्नर है जिसकी वजह से वह हिजड़ों की मंडली में अपने आप को पूरी तरह से स्थिर नहीं कर पाता। हीजड़ों की मंडली में रहने के बावजूद भी विनोद उनके रहन-सहन, पहनावे ,बातचीत ,भाषा आदि सभी को अपना नहीं पाता।

अपनी मां से पत्र में लिखता भी है " उनके लात घूंसे थप्पड़ और कानों में गर्म तेल से टपकती किसी भी संबंध को न बख्शने वाली अश्लील गालियों के बावजूद न मैं मटक मटक कर ताली पीटने को राजी हुआ, न सलमें -सितारे वाली साड़ी लपेट लिपस्टिक लगा कानों में बूंदे लटकाने को। बहुत कुछ अविश्वसनीय वह हरकतें भी जिसने मुझे बहुत तोड़ने की कोशिश की और जिनका जिक्र में बा तुझसे कैसे कर सकता हूं । " 5

इस प्रकार उसे अपने वजूद को साबित करने की जद्दोजहद करनी पड़ती है ।

इस संबंध में डॉ रेशमी पांडा मुखर्जी कहती है-" अपने रक्त संबंधों से अपने गली मोहल्लों से वह कोसों दूर पहुंचा दिया जाता है। ।बदनाम गलियों में जीने पर विवश किया जाता है ।अपराध केवल इतना कि वह किन्नर है। वह समाज का आम हिस्सा बनकर नहीं रह सकता यह हमारी समाज व्यवस्था का अंधकारमय एवं कालीमामय पक्ष है । जिस पर पूरजोर बहस की जरूरत है। आखिर थर्ड जेंडर को क्यों समाज की मुख्यधारा से काटकर अलग कर दिया जाता है ।परिवार का सुख ,प्रियजनों का साथ, सामाजिक मर्यादा, आदि से वंचित कर उन्हें यह कलुषित जीवन जीने पर क्यों बाध्य किया जाता है । इस अमानुष व्यवहार को कब बहिष्कृत किया जाएगा?" 6

पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा उपन्यास का नायक अत्यंत स्वाभिमानी है। अपने कष्ट एवं तकलीफों का रोना रोकर समाज से दया की याचना नहीं करता बल्कि अपने पैरों पर खड़ा होकर स्वाभिमानी बनना चाहता है एवं इसके लिए वह विधायक के द्वारा उपलब्ध कराए गए अवसरों का भी

लाभ उठाता है। कंप्यूटर का प्रशिक्षण भी ग्रहण करता है ।अत्यंत जागरूक एवं शिक्षा के प्रति आस्था रखने वाले युवक के जीवनी से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। घर में मिले शिक्षा के संस्कार के कारण वह पढ़ाई एवं शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रयासरत रहता है। उसके दिमाग में शिक्षा पूरी करने की बात हमेशा घूमती रहती है - "कोशिश में हूं उनसे छिपाकर कोई बड़ा काम सीख लूंगा ताकि, किसी भी रूप में उन पर निर्भर ना रहूं ।अधूरी शिक्षा आड़े आ जाती है। " 7

बिन्नी हिजड़ा मंडली में जाकर भी अपनी शिक्षा पूरी कर लेना चाहता है ताकि उसे अन्य किन्नरों की तरह अपना मान सम्मान को खोकर जीना ना पड़े ।यहां तक कि वह अपने शिक्षा के लिए पैसे चाहिए तो गाड़ियां धोने का काम कर पैसे कमाता है किंतु अन्य किन्नरों की तरह भीख नहीं मांगता। वह शिक्षा के संवैधानिक अधिकार के बारे में जानता है -" राइट टू एजुकेशन पढ़ने की इच्छा रखने वालों के लिए अनेक रास्ते खोल दिए हैं।" 8

चित्रा जी के द्वारा लिखित उपन्यास का शीर्षक भी उपेक्षित तबके की पीड़ा को प्रस्तुतकरता है। अर्थात इस उपन्यास में विनोद एक किन्नर होने के कारण अपने परिवार से विस्थापित किया जाता है । ना वह अपने घर के पते पर अपने मां से पत्र लिख पाता है और ना ही भरे पूरे संपन्न परिवार की मालकिन होने के बावजूद भी उसकी मां वंदना बेन अपने घर के पते पर उसके साथ पत्रव्यवहार कर पाते हैं। यह बड़ी विडंबना की बात है की एक मां को घर के नजदीकी एक पोस्ट मैं खुद का निजी पोस्ट बॉक्स नंबर निकाल उसी के जरिए अपने किन्नर बेटे से पत्राचार कर करना पड़ता है। एक तरफा चिट्ठियों के माध्यम से हिजड़ा जीवन की अनगिनत राशियों को संवेदनशील रूप में एवं गंभीरता से हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है।

समाज का नकारात्मक दृष्टिकोण एवं सरकार की इस समुदाय के प्रति उदासीनता इन सभी के कारण हिजड़ा समुदाय हमेशा से ही पिछड़ा रहा है । कोई शिक्षा प्राप्त कर आगे जाने की कोशिश भी करता तो उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। विनोद भले ही एक हिजड़ा हो किंतु वह अपने अंदर के पुरुषि अस्तित्व को छोड़ना नहीं चाहता। वह पत्र में अपनी मां से इसका जिक्र भी करता है। अपनी शिक्षा हेतु फार्म भरने के संदर्भ में अपनी मां से कहता है -" पर मैंने फार्म देखने के लिए मांग लिया था बा । मेल फीमेल के खाने में तो मेल ही टिक करूंगा ,बा । सरकार भी अजीब है न बा ।" 9

विनोद अपने एवं हिजड़ा समुदाय लोगों के वजूद को लोगों समक्ष रखने हेतु कहता है,-" वहीं जहां सरकार ने अनुसूचित जनजाति को रखा है। पिछड़ा वर्ग को रखा है। विकलांग को रखा है और भूतों को रखा है। ' यह सब समाज के घोर वंचित है ,लिंग दोषी नहीं। बाकायदा स्त्री-पुरुष है।'….." किन्नर बिरादरी का संघर्ष उन्हें मनुष्य माने जाने का संघर्ष है ।फिर वह 'o' अदर में उन्हें क्यों धकेला जा रहा है ।'o' अदर् को खत्म कर देना चाहिए सरकार को। देखिए ,मेरा मानना यह है अपना लिंग उन्हें चुनने की स्वतंत्रता दीजिए।" 10

भारत सरकार के द्वारा किन्नरों के सुरक्षा एवं अधिकार हेतु अनेक कायदे कानून बनाए गए। 2014 में सर्वोच्च न्यायालय ने नालसा बनाम भारत सरकार में निर्णय देते हुए कहा कि सार्वजनिक स्थानों पर हिजड़ों को अछूत माना जाता है उन्हें अपमानित किया जाता है उन्हें गालियां दी जाती है वह गलत है अब इस मानसिकता को बदलने की जरूरत है एवं तृतीय लिंगी लोगों को मानवी अधिकारियों का प्रयोग करने की आजादी दी। किंतु ,क्या सरकार के सिर्फ कायदे कानून बनाने से किन्नर जाति को सही में न्याय मिल पाएगा ।तो मैं कहूंगी नहीं। पहले तो हमें समाज में रहने वाले लोगों की उनके प्रति बुरी सोच या नजरिया है ,उसको बदलना जरूरी है। और उन परिवार वालों के विरुद्ध भी कुछ कानूनी प्रावधान होना चाहिए ,जो घर में किन्नर बच्चा पैदा होने पर उसे हिजड़ा मंडली को सौंप देते हैं । सही मायने में तभी कुछ अच्छा बदलाव हो सकेगा।

विनोद दूसरी दुनिया में आकर भी अपने मूल्यों से समझौता नहीं करता। उस हिजड़ा मंडली में पूनम जोशी नामक एक किन्नर जिसमें लड़कियों वाले गुन अधिक होते हैं उससे इसकी मित्रता हो जाती है। पूनम भी विनोद को पसंद करने लगती है एवं विनोद का पूनम के प्रति लगाव बढ़ता है। यहां तक कि पूनम विनोद को उसकी पढ़ाई पूरी करने हेतु जमा किए हुए पैसे भी देती है एवं विधायक से भी मिलाती है। किंतु दुर्भाग्यवश यही पूनम जोशी विधायक के भांजे एवं उनके मित्रों के द्वारा बर्बरता पूर्ण व्यवहार की शिकार होती है। हमारे लिए यह बहुत शर्म की बात है की हवस की पूर्ति के लिए एक किन्नर पर बलात्कार करने वाले बलात्कारियों को बचाने में हमारे देश के नेता लग जाते हैं। वैसे भी किन्नर तो बहिष्कार उपेक्षा झेल ही रहे होते हैं और गालियां तिरस्कार तो उनके जिंदगी का जैसे हिस्सा है। इसके बाद भी उनका शारीरिक बलात्कार होना इसे देखें तो मानवीय मूल्यों का कितना पतन हो रहा है यह पता चल जाता है।

पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा उपन्यास के कथानक के अंतिम चरण में जब बर्बरता की शिकार बनी पूनम जोशी अस्पताल में होती है विनोद उसे देखने चला आता है। यही पूनम उसे बताती है कि उसकी मां बीमार है और उसको बुला रही है। यहां पर उपन्यास के नायक विनोद उर्फ बिन्नी उर्फ विमल को अपने घर वापसी का रास्ता खुल जाता है किंतु जिस मां से वह इतना स्नेह करता है पूरा जीवन पत्रों के माध्यम से उसी में डूबा रहता है उस्मा का वह अंतिम दर्शन भी नहीं कर पाता क्योंकि उससे पहले ही उसकी मां वंदना बहन की मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास का कथानक अत्यंत दुखद है यहां तक कि इस कथानक ने मुझे भी तकलीफ से भर दिया।

अंततः निष्कर्ष तौर पर हम यह कह सकते हैं कि चित्रा मुद्गल जी का प्रसिद्ध उपन्यास पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा यह कोई साधारण उपन्यास नहीं है। बहरहाल यह उपन्यास तृतीय लिंगी व्यक्ति और समाज के द्वंद्व की सघन अनुभूति कराता है साथ ही अपने रोचकता एवं मार्मिकता के कारण हाशिए पर स्थित इस समुदाय की समाज एवं परिवार के द्वारा स्वीकार्यता पर चर्चा भी प्रारंभ कराता है ।यह उपन्यास मानवीय बिंदुओं को ध्यान में रखकर पत्राचार की शैली में लिखा गया गया हृदयस्पर्शी उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास का मुख्य पात्र विनोद उर्फ बिन्नी , समाज के द्वारा अपने पर हुए अन्याय अत्याचार को पत्रों के माध्यम से अपनी मां वंदना बेन को बताते हुए पूरे समाज पर प्रश्न करता है । जन्म से ही शारीरिक विकलांगता मिले किन्नरों का सही मायने में खुद का क्या दोष है? क्यों उन्हें घर से दूर रहने की और समाज से उपेक्षित बर्ताव की सजा मिलती है ?

यह उपन्यास एक किन्नर बच्चे का अपने घर से अलगाव के पश्चात संघर्ष भरा जीवन का एवं घर वापसी की यात्रा का विवरन बयाँ करनेवाला उपन्यास है। लेखिका चित्रा जी इसमें जहां एक तरफ हाशिए पर रखें इस तबके का संघर्ष भरा जीवन बयां करती है। वहीं दूसरी ओर समाज का उनके प्रति गलत रवैया एवं सरकार की इस समाज के प्रति उदासीनता को कम करने हेतु प्रयास करती है।

संदर्भ सूची :

1. राम चरित्र मानस ,तुलसीदास, पृ .904
2. तहलका डॉट कॉम ,चित्रा मुद्गल साक्षात्कार का अंश , अमित सिंह ,2016
3. 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 .नालासोपारा', चित्रा मुद्गल ,सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली ,सं 2019 ,पृ. 13
4. वही,पृ .113
5. वही , पृ. 9
6. 'थर्ड जेंडर के संघर्ष का यथार्थ', संपादक -डॉ.शगुफ्ता नियाज ,विकास प्रकाशन कानपुर ,सं 2018 ,पृ. 69
7. 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 .नालासोपारा',चित्रा मुद्गल ,सामयिक प्रकाशन ,नई दिल्ली, पृ .26
8. वही , पृ. 37

9. वही , पृ. 46
10. वही,पृ.195